# Untitled

श्रीगोपाल विलासिनी वलयसद्
रत्नादि मुग्धकृति
श्रीराधापति पाद पद्म भजना-
नन्दाब्धिमग्नो निशम्
लोके सत्कविराज राज इति यह
ख्यातोदयाम्बोनिधिहि:
तं वन्दे जयदेव सद्गुरु वरम्
पद्मावती वल्लभम्

कलियुगान्त भावि कल्किरुप सजल
जलदाभनिजशोभ पङ्कजनाभ ॥१०॥

# ३. गीतगोविन्दम् अष्टपदि गीतम्

श्री जयदेव कवि विरचिता

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।
विहितवहित्र चरित्रमखेदम् ॥
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥१॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।
धरणिधरणकिण चक्रगरिष्ठे ॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥२॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनि कळङ्ककलेव निमग्ना ॥
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥३॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम् ।
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥४॥

छ्लयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।
पदनखनीरजनितजनपावन ॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् ।
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् ।
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ॥
केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् ।
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥

केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥१०॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।

शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ॥

केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥११॥